International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 45-49

उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षण अभिक्षमता के के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. संजय कुमार द्विवेदी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्री स्वामी नागा जी बालिका डिग्री कालेज, भरुआ, सुमेरपुर, हमीरपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। शिक्षा मानव के लिये आवश्यक तत्व बन गया है। भारत में ही नहीं, संसार के प्रत्येक देश का प्रमुख लक्ष्य अपनी जनता को सार्वलौकिक शिक्षा प्रदान करना है। हमारे देश में भी शिक्षा की अति आवश्यकता है। हमारी शिक्षा हमारे वर्तमान तथा भविष्य निर्माण का अनुपम साधन है। शिक्षा के इन महत्वों को प्राप्त करने हेतु जिन उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं वे ही पथ–प्रदर्शक और संकेत स्तंभ बन जहाँ एक ओर व्यक्ति में ज्ञान, रुचियों, आदर्शों, आदतों और विविध क्षमताओं के विकास हेतु क्षेत्र निर्माण करते हैं, वही मनुष्य को विभिन्न रूपों से आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण को अनुकूल बनाते हुये मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करते हैं। शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : बुन्देलखण्ड क्षेत्र, विद्यार्थी, व्यवसायिक, माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।

शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिर्वतन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है।

शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है, जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन देश और समाज को गतिविधियों से अधूरा रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछड़ेपन का शिकार हो जाता है। अतः षिक्षा ही वह सषक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन की प्रगति करते हुए सामाजिक व आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जब हम शिक्षा का संकुचित अर्थ लेते हैं तो हमारा स्वभावतः इस बात पर चला जाता है कि शिक्षा विज्ञान है अथवा कला कलाएँ प्रायः जन्मजात हुआ करती हैं। काव्य कला आदि के विषय में यही प्रख्यात है। व्यक्ति की रुचि कला में प्रकृया होती है। वह अभ्यास करता है और स्वतः उसे उस कला में दक्षता प्राप्त हो जाती है। पहले शिक्षा के विषय में भी यही धारणा थी। लोग यह समझते थे कि किसी व्यक्ति को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान है और उसमें पढ़ाने की रुचि है तो वह पढ़ाते–लिखाते अपने आप एक कुशल शिक्षक बन जाता है। कुछ सीमा तक यह बात सत्य भी है। कहा जाता है कि शिक्षक पैदा होते हैं, बनाये नहीं जाते। किन्तु 'नीम–हकीम खतरे जान' वाली कहावत से भी हम परिचित हैं। यही हाल शिक्षा का भी है। अपने विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किए हुए भी कभी–कभी कुछ व्यक्ति बड़े अयोग्य शिक्षक सिद्ध होते हैं। शिक्षा निस्संदेह कला है किन्तु यह विज्ञान भी है। शिक्षा का अपना पृथक् शास्त्र है। उसके अपने पृथक् सिद्धांत हैं। बालक की रुचि एवं योग्यता का शिक्षा में दिग्दर्शन होता है। किसी विषय को किस प्रकार पढ़ाया जाय, इसकी जानकारी मिलती है। शिक्षा–सिद्धांत, शिक्षा–मनोविज्ञान, शिक्षण–विधियों आदि पर शिक्षाशास्त्र विचार करता है। शिक्षा का अपना अलग इतिहास है। इस दृष्टि से शिक्षा स्वयं में एक विज्ञान है, एक शास्त्र है, एक विवेचन है और ज्ञान की अन्य शाखाओं के अन्तर्गत उसने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया है। अब वह दर्शन या धर्म का भाग न होकर एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकृत है। किन्तु जहाँ पर हम यह कह रहे हैं कि शिक्षा एक विज्ञान है वहाँ पर हम यह नहीं भूल रहे हैं कि शिक्षा एक कला भी है। शिक्षा–विज्ञान की जानकारी प्राप्त करके भी हम जब तक उसे व्यवहार में नहीं उतारेंगे तब तक हम शिक्षक नहीं बन सकते। अतः शिक्षा का प्रायोगिक रूप भी महत्वपूर्ण है। सिद्धांतों को व्यवहृत बनाना है। यह दक्षता अभ्यास से आती है। यह अभ्यास शिक्षा का कलात्मक पक्ष है। इस दृष्टि से शिक्षा कला और विज्ञान दोनों है।

प्रत्येक राष्ट्र का अपना जीवन दर्शन होता है। यह जीवन दर्शन ही

राष्ट्र समाज के व्यक्तियों में समान जीवन लक्ष्य एवं आदर्शो का निर्माण करता है तथा उन जीवनदर्शो को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उनके व्यक्तित्व को निखारती है और व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उनके विचार एवं व्यवहार मे समाज के लिए हितकर परिवर्तन करती है। व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक शिक्षा की आवश्यकता रहती है। प्रत्येक समय उसका प्रभाव किसी न किसी रूप मे अवष्य विद्यमान रहता है। मानव का अस्तित्व बिना षिक्षा के ''बिना पतवार के नाव'' के समान है। इसकी आवश्यकता प्रत्येक प्राणियों की आन्तरिक शक्तियों को समझनें एवं अन्तर्निहित शक्तियों के समुचित विकास करने में प्रमुखतया रहती है जिससे वह कल्पना तर्क अथवा जिज्ञासा द्वारा नवीन योगदान दे सके।

शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विषयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विषयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।

व्यक्ति अपने आने वाली तरूण पीढ़ी के समझ अपने अनुभव एवं मूल्य इस उद्देश्य से रखता है ताकि वे सांस्कृतिक व्यवहार की रक्षा कर सके एवं उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो। बालक को विद्यालय में रखकर एक विशेष वर्ष में अध्ययन करने हेतु तैयार किया जाता है। तथा उस वर्ष के अंत में बालकों की परीक्षा लेकर यह ज्ञात किया जाता है कि वह बालक पूरे वर्ष के दौरान पढ़ाये गये पाठ्यक्रम का कितना ज्ञान प्राप्त कर सका। वही उसकी उस वर्ष की शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। अर्थात् एक निश्चित समय सीमा में छात्रों द्वारा विद्यालय में रहकर प्राप्त उपलब्धि शैक्षिक उपलब्धि के नाम से जाना जाता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल बुन्दलेखण्ड क्षेत्र वरन् सम्पूर्ण उ.प्र. के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यवसायिक संतुष्टि का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का का आंकलन किया जा सकेगा। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति शारीरिक शक्तियों तथा व्यावसायिक रुचियों को विकसित करता है। व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का उचित विकास, मानवीय गुणों का विकास तथा कर्त्तव्यों का विकास करता है। शिक्षा ही मनुष्य के प्राचीन साहित्यिक ज्ञान और सामाजिक दायित्वों का विकास करती है। शिक्षा सामाजिक कुरीतियों का निवारण करके उसमें सामाजिक भावना का विकास करती है एवं भावनात्मक एकता तथा कुशल नागरिक का निर्माण करती है। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र का सम्पूर्ण विकास होता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है।
2. बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव ज्ञात करना।
- बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव के सार्थक अन्तर का ज्ञात करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड है। इसके अन्तर्गत 7 जिले – चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, जालौन, झांसी और ललितपुर का भूभांग आता है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, izfr'kr (%), S.D., Chisquare test, ‘t’ Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।
- **प्रष्नावली निर्माण :** प्रश्नावली का सामाजिक अनुसंधान में विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र में फैले हुए सूचनादाताओं से आंकड़े संकलन करने में महत्वपूर्ण स्थान है। यह आंकड़े संकलन करने की एक ऐसी प्रविधि है, जिसमें कम समय में अनेक सूचनादाताओं जो कि विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए होते हैं, से सूचना एकत्रित की जा सकती है। प्रश्नावली प्रश्नों की सूची होती है जिनका उत्तर स्वयं सूचनादाता भरता है। अतः इसका प्रयोग उन्हीं परिस्थितियों में किया जा सकता है जिसमें सूचनादाता शिक्षित हो।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से आर्येन्दु, आहुजा (2001)[1], अग्रवाल, रीना (2007)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], झा, शीतला एवं दुबे शैलजा (2016)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6], पाठक, पी.डी. (2007)[7] ने शोध विधि एवं शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित कार्य किये है।

समष्टि व प्रतिदर्श :

शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित बुन्देलखण्ड के 07 जिलो से दो–दो विद्यालय (शहरी एवं ग्रामीण) से 2–2 शिक्षक कुल 28 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 28 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएं कुल 560 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

9. बुन्देलेखण्ड का सामान्य परिचय :

बुन्देलखण्ड मध्यभारत का एक प्राचीन क्षेत्र है। इसका विस्तार मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश में भी है। बुंदेली इस क्षेत्र की मुख्य बोली है। इतिहास, संस्कृति और भाषा के मद्देनजर बुंदेलखंड बहुत विस्तृत प्रदेश है। लेकिन इसकी भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषिक इकाइयों में अद्भुत समानता है। भूगोलवेत्ताओं का मत है कि बुंदेलखंड की सीमाएं स्पष्ट हैं और भौतिक तथा सांस्कृतिक रूप में निश्चित है कि यह भारत का एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है, जिसमें न केवल संरचनात्मक एकता, भौम्याकार और सामाजिकता का आधार भी एक ही है। वास्तव में समस्त बुंदेलखंड में सच्ची सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक एकता है। उत्तर प्रदेश के सात जिलों – चित्रकूट, बांदा, महोबा, हमीरपुर, जालौन, झांसी और ललितपुर का भूभांग बंदेलखण्ड कहलाता है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	विद्यार्थियों में शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का			
			सीधा सम्बन्ध है		सीधा सम्बन्ध नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	14	13	92.86	01	7.14
2.	शिक्षक	28	23	82.14	05	17.86
4.	अभिभावक	28	16	57.14	12	42.86
योग		70	52	74.29	18	25.71

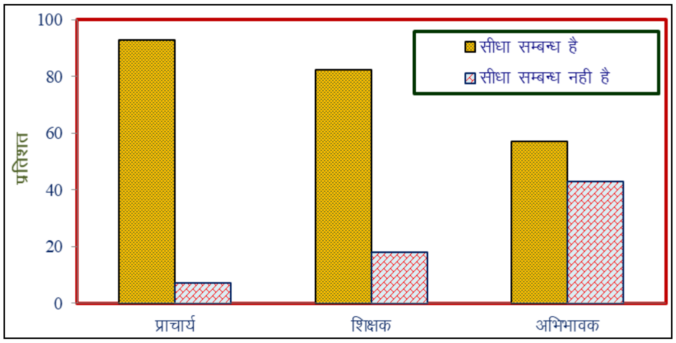

आकृति 1: शोध क्षेत्र अध्ययनरत वद्यार्थियों में शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या :

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 92.86 प्रतिशत प्राचार्य, 82.14 प्रतिशत शिक्षक व 57.14 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और शोध क्षेत्र के 42.86 प्रतिशत अभिभावक, 17.86 प्रतिशत शिक्षक व 7.14 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि विद्यार्थियों में शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध नही है।

व्याख्या–

शोध क्षेत्र के 74.29 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : "बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक 2: बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन			
		छात्र		छात्राओं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 40 अंक से कम (अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं)	32	11.43	22	7.86
2.	40 अंक से अधिक किन्तु 60 अंक से कम (न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति)	139	49.64	122	43.57
3.	60 अंक से अधिक किन्तु 80 अंक से कम (दक्षता की ओर अग्रसर)	85	30.36	107	38.21
4.	80 अंक से अधिक किन्तु 100 अंक से कम (दक्षता की प्राप्ति)	24	8.57	29	10.36

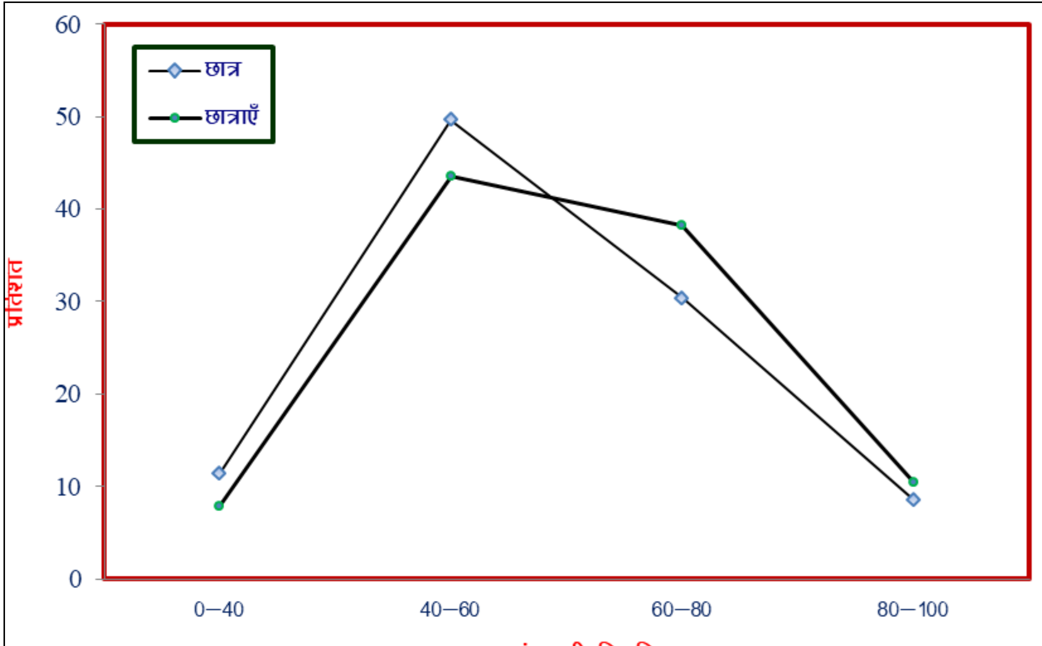

आरेख 2 : बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 में न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 280 छात्र और 280 छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित छात्र/छात्राओं में से 32 छात्र एवं 22 छात्राएं न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं कर पाएँ तथा 139 छात्र एवं 122 छात्राओं ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की। इसी प्रकार से 85 छात्र तथा 107 छात्राएँ दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 24 छात्र एवं 29 छात्राओं ने दक्षता को प्राप्त कर लिया है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र 11.43 प्रतिशत एवं 7.86 प्रतिशत छात्राएँ न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त नहीं कर सके तथा 49.64 प्रतिशत छात्र, 43.57 प्रतिशत छात्राओं ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की है, इसी प्रकार 30.36 प्रतिशत छात्र एवं 38.21 प्रतिशत छात्राएँ दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 8.57 प्रतिशत छात्र एवं 10.37 प्रतिशत छात्राओं ने दक्षता की प्राप्ति कर ली है।

सारणी क्रमांक 3: सार्थकता हेतु सारणी

स्मूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	280	56.82	16.30	-2.19
छात्राएँ	280	59.82	16.08	

d.f = (N_1-1) + (N_2-1)
= (280-1) + (280-1)
= 279 + 279
= 558

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण में शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों में अधिगम स्तर सम्बन्धी औसत उपलब्धि 56.82 तथा मानक विचलन 16.30 है। छात्राओं में अधिगम स्तर औसत उपलब्धि 59.82 तथा मानक विचलन 16.08 है।

शोध क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक

अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान –2.19 है।

व्याख्या

5.58 df. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –2.19 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है।

सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और माध्यमिक विद्यालय के छात्र व छात्राओं में शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का शैक्षिक उपलब्धि में पड़ने वाले प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

12. सन्दर्भ

1. आहुजा, राम – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001.
2. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003.
4. झा, शीतला एवं दुबे शैलजा – मध्याह्न भोजन कार्यक्रम व स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2016; Vol. VI, Issue – I, pp.59-64.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878–1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.